सम्पन्न बनने की सहज विधी

12.10.2014

सम्पन्न बनने की सहज विधि

आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

Spiritual Applications Research Centre
(SpARC)

पोस्ट बॉक्स नं.- 66, ज्ञान सरोवर, आबू

पर्वत–307501, राजस्थान.

सम्पन्न बनने की सहज विधि

प्रस्तावना

सम्पन्न बनने के लिये समय की समीपता के नज़ारे देख रहे हैं। बापदादा ने भी सीजन की पहली वाणी में सार रूप का पुरुषार्थ ही बताया है। वह है कि सारे दिन में "मेरा बाबा- मेरा बाबा''का अनुभव होता रहे।

"मेरा बना दिया तो याद अमर है वैसे देखा जाये तो छोटी सी मेरी चीज भी भूलना मुश्किल है, तो आप को मेरा बना लिया तो भूलने की मेहनत खत्म''

12-10-14

बापदादा ने अपनी अलग-अलग वाणियों में सम्पन्न बनने की बहुत ही सहज युक्तियाँ समय प्रति समय बताई हैं। जो हम बच्चे सहज रीति से और निरंतर कर सकें। ऐसे कोहिनूर समान सिलेक्टेड ज्ञान रत्नों का यह बहुत ही अनमोल संग्रह (पार्ट१)में है। जो हमेशा अपने साथ रखकर सहज ही स्मृति में दोहराते हुए कर्मयोगी फरिश्तापन का अनुभव करें और अपनी ऊँची स्थिति द्वारा जल्दी ही बापदादा को प्रत्यक्ष करें।

सहज पुरुषार्थ पार्ट-१

- निरंतर स्मृति में रहने का साधन है मेरापन भूल जाना। सब कुछ बाप का है। यह तन भी आपका नहीं। बाप का है।

30-4-77

- अभी परमात्म बॉम्ब द्वारा धरनी का परिवर्तन करो। इसका सहज साधन है सदा मुख पर वा संकल्प में “बापदादा- बापदादा’’ की निरंतर माला के समान स्मृति हो। सबकी एक ही धुन हो “बापदादा’’।

  01-01-79

- जो भिन्न -भिन्न पुरुषार्थ की युक्तियाँ सुनाई हैं, उनमें से एक भी युक्ति अपनाओ तो स्वयं भी सफल हो जायेंगे और औरों को भी सफल बना सकेंगे। 04-02-80

- सभी को एक ही वरदान मिला है, “जो है, जैसा है, मेरा है’’ यह सेकेण्ड में वर्से का अधिकारी बनाने की लॉटरी कहो, भाग्य कहो जो बाप ने स्वयं दिया। इस एक वरदान को ही सदा याद रखो तो मेहनत से छूट जायेंगे। 20-01-81

- जहाँ मेरापन होगा वहाँ भय जरूर होगा। “मेरा बाबा’’ सिर्फ एक ही है जो निर्भय बनाता है।

15-01-81

- दिलाराम बापदादा सच्ची दिल पर राजी है। सिर्फ तीव्र दिमाग वालों पर नहीं। नॉलेज को समाने का स्थान दिमाग है, लेकिन माशूक को समाने का स्थान दिल है। 18-03-87
- योग लगाना भी क्या है, खुशी में नाचना ही तो है ना। बाप की महिमा गाते रहो। 25-12-89
- एक ही “मेरा बाबा’’ यह अनुभव होता रहे यही फुल नॉलेज है। 03-04-91
- “मेरा बाबा- मेरा बाबा’’ दिल से मानना यही विधि है आगे बढ़ने की। 03-10-92
- “मेरा बाबा’’ की “स्मृति’’ की प्रैक्टिकल निशानी “खुशी’’ है। 10-12-92

- ब्राह्मण जीवन का श्वांस है खुशी। इसलिए सदा खुश रहो। बाप मिला अर्थात सब कुछ मिला।

12-11-92

- सबसे बड़ी खुशी की बात है – “बाप ने अपना बना लिया’’। दुनिया वाले तड़पते हैं कि भगवान की एक सेकेण्ड भी नजर पड़ जाये और आप सदा नयनों में समाये हुये हो। 20-12-92
- बाप आया ही है सबकी फिकर लेने के लिये।

18-02-92

- ब्राह्मण जीवन अर्थात खुश रहना और दूसरों को भी खुशी बाँटना। अर्थात दुआयें देना और दुआयें लेना। 09-03-93
- दृढ़ संकल्प रखो और बातों को भूल जाओ। एक ही बात पक्की रखो – मुझे खुश रहना है। तो बातें क्या लगेंगी ? - खेल। 23-02-97

- सतयुग में भी परमात्मा के लाडले नहीं होंगे। दिव्य आत्माओं के लाडले होंगे। लेकिन इस समय परमात्मा बाप के लाडले हो। 06-03-97
- बाप की महिमा तो आत्मायें गाती हैं लेकिन आप बच्चों की महिमा स्वयं भगवान बाप करते हैं। 30-03-98
- दो भुजा वालों को साथी बना लेते, हजार भुजा वाले को क्यों नहीं साथी बनाते हो? कौन ज्यादा सहयोग देगा? 01-03-99
- अगर आप समझते हो कि जल्दी -जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो तो तीव्र गति का प्रयत्न है सब अपनी वृत्ति को अपने लिए, दूसरों के लिए पोजिटिव धारण करो। 24-02-02

अनमोल रतन

- सदा एक शब्द याद रखना कि “मैं निमित्त हूँ’’ ऐसे निमित्त बनने से ही निराकारी, निरहंकारी और नम्रचित्त, निर्संकल्प अवस्था में रह सकते हैं।

  02-02-69

- बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो माया दूर से ही मूर्छित हो जायेगी। 23-10-70
- सर्व के सहयोगी बनने वा सर्व का सहयोग लेने के लिये सहज पुरुषार्थ है –बीज रूप से कनैक्शन अर्थात योग। 13-03-71
- अगर कोई बड़े के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिकर और निश्चिंत रहती है। तो सभी बोझ बाप के ऊपर रख अपने को हल्का कर देना चाहिये।

- बोझ उतारने का वा मुश्किल को सहज करने का साधन है – ‘‘बाप का हाथ और साथ’’। 04-07-71
- सर्वज्ञ बाप से ही सदा काल की प्राप्ति होगी इसलिए अल्पज्ञ आत्माओं से अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा नहीं रखो। 08-05-73
- सब बातों का रेस्पॉन्सिबल बाबा है, बच्चे सदा हर बात में फ्री हैं, स्वतंत्र हैं। 08-02-77
- मदद मिलने का रास्ता पकड़ना चाहिए या माँगना चाहिये? मदद मिलने का रास्ता है हिम्मत। हिम्मत रखो तो मदद लाख गुना मिलेगी। 10-06-77
- ट्रस्टी अर्थात मैंपन समाप्त और बाबा बाबा ही मुख से निकले।
- देही अभिमानी अर्थात नष्टोमोहा बनने का सहज साधन हुआ – ‘मैं ट्रस्टी हूँ’। 22-06-77

- कभी कोई बात आये तो सोचो बापदादा हमारे साथ है। ऑलमाइटी अथॉरिटी हमारे साथ है।
- सारे विश्व के अन्दर सबसे श्रेष्ठ नसीब हमारा है, ऐसे निश्चय रखो क्योंकि बाप ने स्वयं आकर हमें अपना बनाया है।
- परमात्मा के एक सेकेण्ड के दर्शन के लिए दुनिया तड़प रही है और आप तो उनके बच्चे बन गये हो। तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिए।
- बाप के साथ उठना, बैठना, खाना, पीना यह है गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ। 18-01-78
- मैं पन और मेरा पन समाप्त हुआ, यही समानता और सम्पूर्णता है। 01-04-78
- बाप की प्रीत में रहना अर्थात अशरीरी सहज बनना। 06-02-80

- आपका पहला वचन क्या है? 'एक बाप दूसरा न कोई' अर्थात मरना। नाम मरना है लेकिन सब कुछ पाना है। 03-12-78
- बच्चा बनना अर्थात अधिकारी बनना। कभी भी अपने में भी संशय न हो कि सम्पूर्ण बनेंगे या नहीं। 05-12-79
- जितना आप लोग बाप को याद करते हो, बाप आपको पदमगुणा याद करते हैं – इसलिए रोज याद का रिटर्न देने के लिए बाप चक्कर लगाते हैं। 15-12-79
- सतयुगी प्रारब्ध से भी विशेष, बाप की प्राप्ति की प्रारब्ध अभी है। अब की प्रारब्ध है – 'परमात्मा के साथ डायरेक्ट सर्व सम्बंध'। 21-01-80
- सब समस्याओं का मूल कारण है कनैक्शन लूज़ होना। 19-03-81

- ईश्वरीय परिवार पसंद बनने के लिए सिर्फ छोटी सी एक बात है –" रिगार्ड दो और रिगार्ड लो''।

27-03-81

- सर्व खजानों की चाबी एक शब्द 'बाबा।

12-10-81

- तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए – 'सोचो कम' 09-01-83
- जहाँ बाप है, वहाँ कितने भी चाहें तूफान हों, वह तोहफा बन जायेंगे। 15-02-83
- बाप का बनना अर्थात विशेष आत्मा बनना। जब से बाप के बने हो उस घड़ी से विश्व के अंदर सर्व से श्रेष्ठ गायन योग्य और पूजन योग्य आत्मा बने।

24-02-83

- मेरा है तो विघ्नों का जाल है और मेरा नहीं है तो निर्विघ्न। 29-12-83

- याद ही समीप का अनुभव कराती है, बाबा शब्द ही सहज योगी बना देता है। 29-12-83
- जब मेरापन होता है, तब फिकर होती है। जब बाप के हवाले कर दिया तो बाप जाने और बाप का काम जाने। 21-11-84
- मेरा कहना और मूंझना। तेरा कहना और मौज में रहना। 12-12-84
- ‘बाप मेरे साथ है’ इसलिए बाप के आगे अक्षौणी सेना भी कुछ नहीं है। 25-11-84
- परमात्म-डिरेक्टरी के विशेष वी.आई.पी. हम हैं। इसलिए ही गायन है भोलों का भगवान। दुनिया की बाहरमुखी चतुराई बाप को पसंद नहीं। 15-01-86
- नंबर भी बनते हैं, सच्ची साफ दिल के आधार से – सेवा के आधार से नहीं। 18-01-86

- बाप के ऊपर जिम्मेवारी दे दी तो बेफिकर हो गये। अपने ऊपर जिम्मेवारी समझने से फिकर होता है।
10-03-86
- संतुष्टता की निशानी –वह मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से संतुष्ट होंगे।
05-10-87
- कर्मातीत अर्थात सदा भरपूर – सदा संतुष्ट। मन भी राजी – तन भी राजी और दूसरे भी राजी – इसको कहते हैं कर्मातीत। 18-12-87
- चाहें ज्ञान अर्थात समझ कितनी भी बुद्धि में हो, लेकिन स्नेह के बिना ज्ञान रूखा है। 06-01-88
- कर्म करने से पहले यह सोचो कि 'मैं ट्रस्टी हूँ' अर्थात सब कुछ बाप का है। 12-03-88

➢ चाहें स्थूल साधारण काम हो, चाहें हजारों की सभा के बीच स्टेज पर स्पीच करनी है – दोनों मौज से करे, इसको कहते हैं सरेण्डर जीवन। 30-01-88

➢ मेहनत और थकावट से बचने के लिए अर्थात मन को सदा हल्का और खुश रखने के लिए हमेशा समझो, 'करावनहार करा रहा है, चलानेवाला चला रहा है'। 20-02-88

➢ बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है और जो होनेवाला है वह और भी बहुत अच्छा होगा, क्योंकि कराने वाला अच्छे ते अच्छा है ना ! 01-12-89

➢ बापदादा को राजी करना बहुत सहज है। बापदादा को राजी करने का सहज साधन है, 'सच्ची दिल'। 04-11-01

- ज्ञानी योगी आत्मा की निशानी है ‘संतुष्टता’। संतुष्ट आत्मा ड्रामा के हर दृश्य को देख “वाह ड्रामा वाह’’ कहेंगे। 13-12-89
- विश्व की राजाई तो 20 जन्म होगी लेकिन यह बेफिकर बादशाही इस युग में एक जन्म के लिए ही मिलती है। 25-12-89
- सेवा में सफलता का सहज साधन ही यह है ‘कराने वाला करा रहा है’। अगर मैं कर रहा हूँ तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो वह सर्वशक्तिवान होने से कर्म का फल भी इतना ही श्रेष्ठ मिलता है। 25-12-89
- भोग लगाकर खायेंगे तो ताकत आयेगी। बिना भोग लगाये खाया तो सिर्फ पेट भरेगा लेकिन आत्मा में शक्ति नहीं आयेगी। 25-12-89

- बाप से नंबरवन प्यार है ऐसे मुरली से भी प्यार है? कभी कोई ऐसे बहाने से क्लास मिस किया है? बाप की याद के साथ पढ़ाई भी कभी मिस न हो। 22-02-90
- बाप ने हर आत्मा को विशेष चुनकर ईश्वरीय परिवार में लाया है। अपने आप नहीं आये, बाप लाया है। 07-03-90
- कोई कोई बच्चे बहुत पुरुषार्थ करने में भी मेहनत करते हैं। बापदादा को यह अच्छा नहीं लगता। साथ में रहने वाले को मेहनत करके याद किया जाता है क्या? 13-03-90
- कैसी भी मुश्किल सेवा हो लेकिन बुद्धि से उस सेवा को बाप के आगे अर्पण कर दो। 19-03-90
- सदैव इसी स्मृति में रहो कि हम इतने भाग्यवान हैं जो हम परमात्मा की छत्रछाया में हैं। 31-03-90

- जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी? 18-01-91
- उन्हें तो इलेक्शन और सिलेक्शन का फिकर है। लेकिन तुम्हें तो स्वयं भगवान ने सिलेक्ट कर लिया। 16-05-91
- तपस्या अर्थात एक बाप दूसरा न कोई अर्थात तेरा – मेरा नहीं। 04-12-91
- कितना भी बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे समझो जैसे नचानेवाला नचा रहा है और हम नाच रहे हैं, तो थकेंगे नहीं, कन्फ्यूज़ नहीं होंगे, एवरहैप्पी रहेंगे। 31-12-91
- सबसे सहज और निरंतर याद का साधन है – सदा बाप का साथ अनुभव हो। 13-02-92

- सदा यही स्मृति में रखो कि बापदादा की सदा मदद अर्थात सहयोग का हाथ मेरे सिर पर है।

18-02-92

- सदा एकरस स्थिति में रहने की सहज विधि क्या है ? 'एक' की याद एकरस स्थिति बनाती है।

03-10-92

- जब भी मन या बुद्धि भटकती है तो गीत गाओ – 'पाना था सो पा लिया – बाप मिला सब कुछ मिला'। 13-10-92

- सदा इस भाग्य को सामने रखो – कौन हूँ? किसका हूँ? और क्या मिला है? 30-11-92

- बाबा कहा और खजाना मिला। तो बिन कौड़ी बादशाह बन गये। 30-11-92

- मुरली कभी मिस तो नहीं करते? ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की। 10-12-92

- सदा विजयी बनने का सहज साधन है ‘ एक बल एक भरोसा’। एक में भरोसा रखने से ही एक बल मिल सकता है। 20-12-92
- एक बल एक भरोसा की निशानी है –खुश रहेंगे, मेहनत नहीं लगेगी। 18-01-93
- कम्बाइन्ड रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी मनोरंजक अनुभव होगी। 07-03-93
- परमात्म संग कभी मुश्किल अनुभव कराता? बापदादा को भी बच्चों की मेहनत या मुश्किल अनुभव करना अच्छा नहीं लगता। 07-03-93
- संगमयुग को विशेष वरदान है सहज प्राप्ति का, मेहनत कम और सफलता ज्यादा। इसलिए नाम भी है सहजयोगी। 09-03-93

- अगर गुप्त हैं तो सबसे आगे हैं। गुप्त पुरुषार्थ, गुप्त सेवाधारी सदा ही आगे हैं। ऐसे नहीं समझो कि पीछे हैं। 18-11-93
- साधनों को सहारा नहीं बनाओ। निमित्त मात्र साक्षी हो सेवा प्रति कार्य में लगाओ। 16-12-93
- कुछ भी मेरा है तो बोझ है, इसलिए तेरा-तेरा कहते फरिश्ता बनो। 10-01-94
- ब्राह्मण जीवन में सबसे श्रेष्ठ खजाना संकल्प का खजाना है। श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार हैं। 25-03-94
- मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है। 05-12-94
- ड्रामानुसार संगमयुग में साधारण बनना यह भी भाग्य की निशानी है, क्योंकि संगम पर ही

भाग्यविधाता भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींच रहे हैं।

17-11-94

- मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है।

  05-12-94

- अनुभव करो कि सर्वशक्तिवान बाप मेरे साथ है। बस यह एक बात भी अनुभव किया तो सब में पास हो जायेंगे। 04-12-95

- ब्राह्मणों का आदि से अब तक का नियम है कि न बिलकुल सादा हो, न बहुत रॉयल हो। बीच का होना चाहिये। 22-12-95

- जो दिल से बाबा कहते हैं, उनको बाबा द्वारा दिल में सहज ही खुशी और शक्ति की प्राप्ति होती है।

  09-01-96

- ब्राह्मण बनना अर्थात अच्छा ही अच्छा है।

  18-01-96

- परिस्थिति को शिक्षक समझो तो वह आपको दो शक्तियों की अनुभवी बनाती है। एक सहन शक्ति, दूसरा सामना करने की शक्ति। 18-01-96
- यूज़ कम करते हो, सिर्फ कहते हो बाबा साथ है। इसलिए यूज़ करो। जब सर्वशक्तिवान साथ है तो सफलता आपके चरणों में दौड़नी है। 16-02-96
- स्व पुरुषार्थ का बैलेन्स या गति कभी भी कम होती है, उसका कारण यह है कि अपने को करनहार के बजाय करावनहार समझ लेते हो। 10-03-96
- जब साइन्स की दवाइयाँ एक्स्ट्रा एनर्जी ला सकती हैं तो क्या बाप की याद से आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती ? 10-03-96
- बाप साथ है, बाप का कार्य है, बाप करा रहा है तो बोझ नहीं होगा। हल्के हो नाचते रहेंगे। 23-02-97

- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा इन चारों सब्जेक्ट का सार दो शब्द है। "एक बाप ही मेरा संसार है"।

03-04-97

- सारे कल्प में चक्कर लगाओ तो आप जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसी धर्मात्मा, महान आत्मा, राज्य अधिकारी आत्मा किसी का भी इतना बड़ा भाग्य नहीं है, जितना आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का है। 13-11-97
- प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना - यह है दुआयें देना और दुआयें लेना। 28-11-97
- बाप को काम ही क्या है – बच्चों को समान बनाकर साथ ले जाना। 18-01-98
- यह परमात्म पालना सारे कल्प में सिर्फ इस ब्राह्मण जन्म में आप बच्चों को प्राप्त होती है। 30-03-98

- सबको सुख देना, किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से – उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती है। 18-01-98
- सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो - यह है स्वच्छ मन। 15-02-99
- आप नहीं चल रहे हो, चलानेवाला चला रहा है, इसलिए अथक हो। 01-03-99
- कुछ भी हो, बाप साथ है तो मूँझने की क्या बात है। 01-03-99
- समस्या आ गयी यह नहीं सोचो। पेपर आया, पास हुआ, मौज मनाओ। 01-03-99
- ब्राह्मण जीवन है मजे की। संगमयुग है मजे का युग। बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है। 30-11-99

- सबसे बड़ा खजाना है जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह है जो आप बच्चों के पास है – श्रेष्ठ संकल्प का खजाना। 15-12-99
- अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ,रूहरिहान करो, 'कर्मयोगी फरिश्ता भव का वरदान लो। फिर कामकाज में आओ। 16-12-00
- आप सबको पता है जगदम्बा माँ का एक सदा धारणा का स्लोगन रहा है, याद है? "हुक्मी हुक्म चलाए रहा।'' 31-12-00
- मेरी यह विशेषता है, नहीं , परमात्म-देन है। परमात्म-देन समझने से विशेषता में परमात्मा शक्तियाँ भर जाती हैं। 11-03-02

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre)

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501

राजस्थान, भारत

मोबाईलः +91 9414003497

ई-मेल – bksparc@gmail.com
sparcwing@bkivv.org